. तुम सा.. नहीं जहाँन में

बी के. किशन दत्त अनुदर्शी

अभिषेक उच्च स्तरीय विद्यालय में प्रतिभाशाली विद्यार्थी है। उसके उज्जवल व्यक्तित्व को देखकर उसके होवनहार व्यक्तित्व की कल्पना किये बिना शायद ही कोई रह सके। अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र है वह। उसके पिता का एक बडा व्यवसाय है। परिवार का हँसता-खेलता सौहार्दपूर्ण वातावरण उसे प्राप्त है। जीवन हँसते खेलते बीत रहा होता हैं। अभिषेक कॉलेज में पढाई पढ रहा होता है। चलते चलते अभिषेक की रूचि अब पढाई में नहीं रही है। द्वितीय वर्ष की परीक्षा में वह अनुतीर्ण हो चुका है। निराश होकर उसने पढाई छोड देने का निर्णय कर लिया। वह संसार से बेखबर अपनी ही दुनिया में जीने लगता है। ऐसा लगता है कि जैसे कि उसे कोई आन्तरिक ठेस पहुँची हो। वह निराशा की गहरी खाई में डूबता जा रहा है। वह यह भी नहीं समझ पा रहा है कि आखिर मुझे क्या हुआ है? उसकी ऐसी अवस्था है जैसे कि उसके चिन्तन का दिवालिया ही निकल गया हो। धीरे धीरे ऐसा लगने लगता है कि बिना किसी लक्ष्य और उमंग के मौन जीवन जीते चले जाना शायद उसकी नियति बन गई हो। उसकी मेडिकल जाँच भी करा ली गई है। सभी कुछ सामान्य है। वर्ष के बाद वर्ष यूँ ही बीतते जा रहे हैं। उसके माता-पिता भी चिन्तित हैं कि अब क्या किया जाये। बार बार सोचते कि अभिषेक के बारे में हमने जो सपने संजोये थे, जो अरमान रखे थे, उन सबका क्या.....!

दीवाली का उत्सव है। पास पडौस सभी के घरों में दीपोत्सव मनाया जा रहा है। सभी लोग बहुत खुशी और उमंग-उत्साह में हैं, लेकिन अभिषेक के घर में सुनसान सा है। कोई खुशी की लहर नहीं, कोई दीपों की चमक नहीं है। अभिषेक अपनी दुनिया में मग्न दीवाली से बेखर सा बैठा हुआ है। अभिषेक की नजर यकायक सामने दरवाजे पर ठहर सी गई। कुछ ही सैकिण्ड में अभिषेक देखता है कि एक श्वेत वस्त्रधारी घर के मुख्य द्वार से प्रवेश कर रहा है। पहली ही नजर में, ऐसे दिव्य पुरूष को देखकर अभिषेक की आँखें चमक उठीं, वर्षों के बाद उसके चेहरे पर एक लम्बी मुस्कान थी। मानो सूर्य के चारों ओर से बादल तितर-बितर हो गये हों और सूर्य की लालिमा भरी आभा से मन प्रफुल्लित हो उठा हो। यह दृश्य उसके माता-पिता देख रहे थे। इस दृश्य को देखकर उनको भी ऐसा लग रहा था कि जैसे अभिषेक को वह मिल गया हो जो उसके अचेतन की चाह थी। अभिषेक के माता-पिता के साथ थोडे समय की वार्तालाप के बाद उस श्वेत वस्त्रधारी ने उन्हें एक निमन्त्रण पत्र दिया और वापिस चला गया। अभिषेक को साथ लेकर उन्होंने राजयोग सेवाकेन्द्र पर जाकर ईश्वरीय ज्ञान-योग का पाठ्यक्रम सीखना आरम्भ कर दिया। एक सप्ताह की ज्ञान-योग की चर्चा के बाद अभिषेक को ऐसा आभास होने लगा कि उसके जीवन में एक अदृश्य आशा की किरण का संचार हो गया है। उसके अचेतन को जिस अव्यक्त शक्ति की चाह थी, जो उसे आदि और अनादि स्वरूप का अलौकिक और शक्तिशाली अनुभव करा सके, वह उसे मिल चुकी थी। सर्वशक्तिमान अव्यक्त परमात्मा के साथ योग के थोडे समय के अभ्यास से आत्मा के अन्तर्जगत के अनुभवों की एक सुहानी सी झलक उसे मिलने लगी थी। उसमें अब उमंग का संचार होने लगा था। जीवन के प्रति वह अब सचेत रहने लगा था। अब वह समझ गया था कि उसके लिये जीवन में सबसे प्रिय वस्तु क्या है।

यह एक मनोवैज्ञानिकता है कि प्राय: मनुष्य कर कुछ रहे होते हैं, लेकिन उनके अर्न्तमन की चाह उसके आदि और अनादि स्वरूप की ओर संकेत कर रही होती है। मनुष्य के व्यवहार को गौर से देखने से यह समझा जा सकता है कि आत्मा के अचेतन में निरन्तर ही एक मनोवैज्ञानिक प्यास बनी रहती है। कई विशेष परिस्थितियों में यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि सब कुछ सामान्य और अनुकूल होते हुए भी आत्मा को उसकी प्रिय वस्तु की एक अनजानी सी तलाश बनी रहती है। उसके जीवन में सब कुछ ठीक

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, simply open the document you want to convert, click “print”, select the “Broadgun pdfMachine printer” and that’s it! Get yours now!

ठाक होते हुए भी ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि उसे कुछ भी प्रिय नहीं। सब कुछ करते हुए भी एक अनमनी सी मानसिकता इसी बात को स्पष्ट करती है कि उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा होता है। अब आत्मा कुछ और देख रही होती है। उसके अचेतन की चाहना अब कुछ और हो गई होती है। अब उसकी प्रियता की अचेतन परिभाषा बदल चुकी होती है। जीवन की एक बहुत बडी सच्चाई यह है कि किसी भी परिस्थिति में आत्मा अपनी निजता के अनुभव को आत्मसात् करने को आतुर रहती है।

प्रश्न उठता है कि मनुष्य के जीवन की विभिन्न स्थितियों और परिस्थितियों को देखते हुए यह कैसे समझें कि वास्तव में आत्मा की मौलिक आकांक्षा क्या है ? क्या वास्तव में उसे वह सब कुछ प्रिय नहीं होता है, जिससे उसका जीवन में सदा ही सम्बन्ध रहता है? क्या आत्मा को वह सब अच्छा नहीं लगता जिसे वह अपने जीवन काल में प्राय: अच्छे के नाम से सम्बोधित करती रहती है? आत्मा की प्रियता और अप्रियता क्या है? इन प्रश्नों के स्पष्टीकरण के लिये हमें आत्मा के अतीत में जाकर विश्लेषण करना होगा। आत्मा के अतीत में जाकर यह आत्मावलोकन करना होगा कि आत्मा की जीवन यात्रा किन किन अनुभवों के जगत से होकर आई है? सृष्टि चक्र में आत्मा की जीवन यात्रा का आदि कैसा रहा था? अपनी जीवन यात्रा के आरम्भ के पहले आत्मा कैसी स्थिति में थी? सृष्टि चक्र में जन्म-जन्म उसके कैसे अनुभव रहे? कल्प के अन्त समय में आत्मा ने कैसे कैसे अनुभव किये थे, आदि आदि? इन प्रश्नों के उत्तर हमें जीवन की गहनतम सच्चाई का बोध कराते हैं।

जीवन में सामान्यत:, परोक्ष या अपरोक्ष रूप से आत्मा अपनी अनादि या आदि स्वरूप की व्यैक्तिक निजता में रहने के लिये प्रयासरत रहती है। यह आकांक्षा आत्मा के अन्तर्जगत में गहरे में रहती ही है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। चेतन रूप से आत्मा भी इसे नहीं जान समझ रही होती है। लेकिन अन्तर्जगत की प्रेरणा से वह कार्य करती रहती है। आत्मा प्रकृति के आकर्षण वश अपनी भ्रमपूर्ण अवस्था में भी निरन्तर अपने इसी आदि अनादि अनुभव की ओर लौटना चाहती है। आत्मा अनादि अविनाशी पूर्व निश्चित विश्व-नाटक अनुसार जिस भी स्थिति में रहती है, चाहे वह होशपूर्ण (चैतन्यता) स्थिति हो, चाहे बेहोशी (जडता) की स्थिति हो, कैसी भी स्थिति में भी अपने अतीत के अनादि आदि स्वरूप के अनुभवों को फिर से प्राप्त करना चाहती है। यह अलग बात है कि कोई भी आत्मा विश्व नाटक के अनुसार अपनी उस स्थिति का अनुभव करने में पूर्णत: स्वतन्त्र नहीं होती है। लेकिन विश्व-नाटक अनुसार ही सही, हर आत्मा को अपनी इस स्थिति विशेष का कम या ज्यादा अनुभव अपने अपने समय पर अवश्य होता है। जीवन में किये हुए हर कर्म के परिणाम-स्वरूप भावनात्मक रूप से या मानसिक रूप से किये अनुभवों से उसके अन्त:करण में एक बिजली की सी चमक के संवेदन सदा उपस्थित रहते हैं।

आध्यात्मिक अध्ययन के गहरे तल में जाने और अर्न्तयात्रा के अनुभवों से ज्ञात होता है कि आत्मा के निज अस्तित्व की दो स्थितियाँ बहुत खास होती हैं। एक अनादि रूप की स्थिति और दूसरी आदि रूप की स्थिति। दूसरे शब्दों में यह कहें कि मुक्ति की स्थिति और जीवनमुक्ति की स्थिति। ये दोंनो ही स्थितियाँ आत्मा को सबसे अधिक प्रिय होती हैं। दोनों ही स्थितियों के अनुभव आत्मा के अचेतन में उसके स्मृति भण्डार में रहती हैं। आत्मा की जीवन यात्रा में अनेक जन्मों के पडाव आते हैं। ये अचेतन की स्मृतियाँ अपने स्फुरणों से आत्मा के अन्तर्जगत में एक कौंध सी देते रहते हैं। ये अतीत के बिन्दु में सिन्धु के स्वरूप के शक्तिशाली अनुभव और जीवनमुक्ति के अनुभव आत्मा के अचेतन को पुन: अपनी ओर खींचते रहते हैं। लेकिन हम प्राय: इनको समझ ही नहीं पाते।

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, simply open the document you want to convert, click “print”, select the “Broadgun pdfMachine printer” and that’s it! Get yours now!

जीवन की पहली मनोवैज्ञानिक स्थिति में जीवनमुक्ति की अवस्था में किये हुए अचेतन के अनुभव आत्मा को अपनी ओर अभिप्रेरित करते रहते हैं। ये अनुभव आत्मा के इन्द्रिय और इन्द्रिय जगत के परे के अनुभवों के घुलेमिले अनुभव होते हैं। आत्मा अपने आदि काल में जब भी इस सृष्टि रंग मंच पर अपने जीवन अस्तित्व में आई, उस समय आत्मा ने जैसे भी अनुभव किये थे वे अनुभव आत्मा को उसके सभी जन्मों के सम्पूर्ण जीवन काल के सबसे अधिक प्रिय लगने वाले होते हैं। आत्मा जब अपनी जीवनमुक्ति की अवस्था में जीवन में रहते हुए भी मुक्ति की अवस्था का अनुभव किया करती थी। कर्म करते हुए भी कर्म के बन्धन का अनुभव नहीं होता था। आत्मा अनासक्त भाव से सभी कर्म करती थी। आत्मा की निजता के सभी सात गुणों का अनुभव जहाँ अपने स्वाभाविक रूप में होता था। ऐसी जीवनमुक्ति की स्थिति का अनुभव आत्मा को बहुत प्रिय होता है।

आत्मा का अनादि स्वरूप शक्ति स्वरूप है। प्रकाश स्वरूप आत्मा अनादि रूप से शक्ति-स्वरूप है। आत्मा की अपनी शक्तियाँ नितान्त व्यैक्तिक होती हैं। आत्मा के अपने अनादि स्वरूप में स्थित होने का अनुभव आत्मा को अत्यन्त प्रिय लगने वाला अनुभव होता है। उस अनुभव को प्राप्त करने पर आत्मा ऐसा अनुभव करती है कि वह सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट और भरपूर है। अब कुछ और करना या कुछ और पाना शेष नहीं रह गया है। बुद्धि के द्वारा किया हुआ ऐसा अल्प समय का अनुभव भी आत्मा के अर्न्तजगत में गहरी छाप छोड जाता है। यह अनुभव भी आत्मा को अपने इसी अनुभव को प्राप्त करने के लिये पुन: पुन: प्रेरणा देता रहता है। यह अनुभव बहुत ही शक्तिशाली, अलौकिक और अत्यन्त आनन्ददायी होता है। यह आत्मा को सबसे अधिक प्रिय लगने वाला होता है। जीवन में होने वाले सभी अच्छे से अच्छे अनुभव इस अनुभव की तुलना में फीके ही होते हैं। जीवनमुक्ति के सुखद अनुभव भी इस अनुभव की तुलना नहीं कर सकते।

इस अनादि स्वरूप के अनुभव का विपरीत अनुभव कोई नहीं होता। सामान्यत: प्रियता और अप्रियता के अनुभवों के बीच जीवन की तुला चलती रहती है। लेकिन अपने मूल स्वरूप के अनुभव में प्रियता और अप्रियता दोनो ही नहीं रहतीं। प्रियता और अप्रियता, सुख-दु:ख दोंनो प्रकार के अनुभवों से परे मुक्त अवस्था। इसे हमारे मनीषियों ने समाधि की अवस्था कहा है। इसे परमानन्द की अवस्था भी कहा गया है। यह अवस्था अपने आप में शक्ति रूप की अवस्था होती है। यह अवस्था नेगेटिव और पॉजिटिव दोनो प्रकार की अवस्थाओं से परे की अवस्था होती है, इसलिये इसे शून्य अवस्था भी कहा गया है। लेकिन यह अवस्था अपने आप में बिन्दु में सिन्धु को समेटे हुए शक्तिशाली अवस्था होती है।

इस संदर्भ में उपनिषद् में वर्णित एक वृतांत का उल्लेख करना यथोचित होगा। राजा याज्ञव्ल्कय अपनी धन-सम्पत्ति को अपनी दो रानियों को बाँट कर संन्यास लेकर जाने लगते है। पहली रानी धन पाकर बहुत खुश होती है। दूसरी रानी का विवेक जाग्रत होता है। वह चिन्तन करती है। वह राजा से पूछती है कि हे स्वामी! क्या इस धन से मेरी आत्मा को अमरता मिल जायेगी? राजा याज्ञव्ल्कय जी कहते हैं कि धन से किसी को भी अमरता नहीं मिलती है। रानी ने कहा कि यदि इस धन से अमरता नहीं मिल सकती तो मैं इस धन का क्या करूंगी। याज्ञव्ल्कय जी आगे कहते हैं कि सम्बन्धों में एक पति अपनी पत्नी की कामना के लिये उसे प्रिय नहीं कहता, बल्कि अपनी आत्मा की कामना के लिये उसे प्रिय कहता है। ठीक इसी प्रकार से अन्य सम्बन्धों के विषय में होता है। ठीक इसी प्रकार से धन के विषय में भी है। पुत्र, धन, पति, पत्नी आदि सभी आत्मा को आत्मा की कामना के लिये प्रिय होते हैं। जिस आत्मा के लिये हम सब कुछ चाहते हैं, सबकुछ को प्यार करते हैं, वह आत्मा ही देखने, सुनने, मनन करने और अध्ययन करने योग्य है। आत्मा को देखने, सुनने, समझने और जानने से मानो वह सबकुछ जान जाती है। वह सबकुछ पा लेती है।

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, simply open the document you want to convert, click “print”, select the “Broadgun pdfMachine printer” and that’s it! Get yours now!

उपरोक्त दोनों प्रकार के अनुभव आत्मा को प्रिय होते हैं। जीवन के काल क्रम में जो भी सामान्य अनुभव आत्मा को होते हैं वे जीवन को निरन्तरता प्रदान करते रहते हैं। उन अनुभवों को भी नजरन्दाज नहीं किया जा सकता। काल, देश, स्थान, वस्तु या व्यक्ति से सम्बन्धित ये इन्द्रिय स्तर और चेतन मन के दायरे के अनुभव भी कहीं ना कहीं आत्मा को सुखद अनुभूति देते हैं, इसलिये ही तो ये प्रिय लगने वाले होते हैं। समय की धारा में इन अनुभवों का असर कम होता जाता है और अपने पीछे छोड जाता है एक विस्मृत चेतना की भ्रमपूर्ण स्थिति। अनुभवयुक्त तथ्यात्मक बात यह है कि अपने अन्तर्जगत में गहरे उतरने से जो अलौकिक अनुभव होते हैं, ऐसे आदि और अनादि स्वरूप के अनुभव आत्मा को विशेष प्रिय होते हैं। आत्मा के अन्तर्जगत के उच्चतम अनुभवों का असर कभी कम नहीं होता। इन अनुभवों की रश्मियाँ जाने अनजाने में अचेतन मन से चेतन मन तक की यात्रा सहजता से करती रहती हैं।

यह विवेक सम्मत और स्वाभाविक ही है कि यदि ये उच्चतम अनुभव आत्मा को सबसे ज्यादा प्रिय होते हैं तो इन उच्चतम अनुभवों को कराने में निमित्त बनने वाला भी तो आत्मा को सबसे अधिक प्रिय होगा। इन अनुभवों की अभिवृद्धि में जहाँ से भी ऊर्जा की प्राप्ति होगी, स्वाभावत: वहॉ आत्मा का ध्यान जायेगा ही। यह ऐसा समझें कि मानो आत्मा का अचेतन एक चुम्बकीय अभिव्यक्ति करता है। वह पात्र या स्रोत जो भी हो। वह अतुलनीय असीम अनन्त सर्वशक्तिमान परमात्मा भी हो सकते हैं। वह सम्पूर्ण अव्यक्त अवस्था को प्राप्त आत्म-सत्ता भी हो सकती है। वह अध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न कोई व्यक्ति विशेष (योगी आत्मा) भी हो सकता है। अभौतिक आत्मा को यदि अभौतिक ऊर्जा का सान्निध्य मिल जाता है तो इससे बढकर आत्मा के लिये कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं होता। आत्मा को आत्मा में स्थित कराने में सहयोगी बनने वाली आत्मिक ऊर्जा, आत्मा को अत्यन्त प्रिय होती है। आध्यात्मिक ऊर्जा के स्रोत ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा 'शिव' हैं। वह सत्यम् -शिवम्-सुन्दरम् है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में उनकी पवित्र उर्जा की कोई तुलना नहीं है। सर्व आत्माओं का उनसे अविनाशी सम्बन्ध है। वे आत्मा को अनादि आदि रूप से सबसे अधिक प्रिय हैं। अत: अध्यात्म के साधकों को जीवन की इस सत्यता पर गहनता से चिन्तन कर कमल-पुष्प समान रहते हुए अपनी आत्म-अन्वेषण की साधना को तीव्रता देते रहना चाहिए।

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, simply open the document you want to convert, click "print", select the "Broadgun pdfMachine printer" and that's it! Get yours now!